राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : क्रियान्वयन समस्याएँ एवं समाधान

उपविषय:- शोध उपागम-बहुविषयक अंतर्विद्यापरक शिक्षा

दिलीप कुमार पारीक
असिस्टेंट प्रोफेसर
राजस्थान शिक्षक प्रशिक्षण विद्यापीठ, शाहपुरा बाग, जयपुर

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ है सीखने और सिखाने की क्रिया। शिक्षा समाज में चलने वाली वह निरन्तर प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का विकास और व्यवहार में सुधार लाना है। शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य ज्ञान और कौशल में वृद्धि कर मनुष्य को योग्य नागरिक बनाना है।

स्वतन्त्रता के बाद अनेक नीतियां बनाई गई जिनमें कुछ कमियाँ थी। इसके तहत बच्चा ज्ञान तो हासिल कर रहा है किन्तु यह ज्ञान उसको भविष्य में रोजगार के अवसर पैदा करने योग्य नहीं बन पा रहा है।

अतः इन कमियों को दूर करने के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 लाने की आवश्यकता महसूस की गयी। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21 वीं सदी की ऐसी पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए आने वाली आवश्यकता को पूरा करना है। यह नीति भारत की परम्परा और सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों को बरकरार रखते हुए 21 वीं सदी की शिक्षा के लिए आंकाक्षात्मक लक्ष्य, शिक्षा व्यवस्था के नियमों का वर्णन सहित सभी पक्षों के सुधार और पुर्नगठन का प्रस्ताव रखती है। यह नीति इस विचार पर बल देती है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता, उच्च स्तर की तार्किकता और समस्या समाधान सम्बन्धित संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए, बल्कि नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना चाहिए।

भारत में समग्र और बहुविषयक तरीके से सीखने की परम्परा रही है समग्र और बहुविषयक कौशल आधारित शैक्षिक दृष्टिकोण के माध्यम से अनुसंधान में सुधार और बढोत्तरी होती रही है। बहुविषयक शोध व्यक्ति में सर्वांगीण विकास यथा कला, मानविकी, भाषा विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, व्यावसायिक तकनीकी, व्यवसाय क्षेत्रों में नैतिकता तथा कौशलों को सीखने में मदद करेगें।

N.N.R.F. के माध्यम से सभी क्षेत्रों में गुणवता पूर्ण अकादमिक अनुसंधान को उत्प्रेरित किया जायेगा। प्राचीन इतिहास से मिले साक्ष्यों से पता चलता है कि उच्चतर शिक्षा के स्तर पर सर्वोत्तम शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया उस वातावरण में श्रेष्ठ होती है जहाँ अनुसंधान और सृजन की मजबूत संस्कृति रही हैं। दुनिया के श्रेष्ठ अनुसंधान बहुविषयक विश्वविद्यालय में ही हुए हैं।

प्राचीन कई ऐसे व्यापक साहित्य है जो विभिन्न विषयों के संयोजन को प्रकट करते हैं बाणभट्ट की कादम्बरी शिक्षा को 64 कलाओं के रूपों में वर्णित करती है इनमें न केवल गायन और चित्रकला जैसे विषय है अपितु रसायन शास्त्र, गणित तथा व्यावसयिक क्षेत्र के विषयों को भी शामिल किया गया है। आज रोजगार और वैश्विक पारिस्थितिकी में तीव्र गति से परिवर्तनों से यह जरूरी हो गया है कि बच्चों को जो कुछ सिखाया जावे वह उससे सतत् सीखने की कला भी सीखे। यह तभी सम्भव है जब उसमें जिज्ञासा के कौशल को विकसित किया जाये। 21 वीं सदी की शिक्षा ऐसी हो जो विषय वस्तु की अपेक्षा बच्चा समस्या समाधान और तार्किक और रचनात्मक रूप से सोचना सीखे, विविध विषयों के बीच अन्तर सम्बन्ध, कुछ नई सोच, नई जानकारी एवं नये बदलाव को उपयोग में ला सके।

पाठ्यक्रम में बहुविषयक सामग्री को शामिल किया जावे। विज्ञान और गणित के अलावा बुनियादी कला, शिल्प, मानविकी कला, खेल फिटनेस, भाषा साहित्य, संस्कृति और मूल्यो का समावेश किया जावे। इस शिक्षा नीति में बताया गया है कि शिक्षा बालकों का शैक्षिक विकास या मूल्यांकन पर आधारित ना होकर यह बालकों के व्यक्तित्व का समग्र विकास करने वाली होनी चाहिए। इस नीति में महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा को स्थान दिया गया है। यथा हस्तकौशल, आध्यात्मिकता, शिल्पकला, शारीरिक एवं बौद्धिक (मानसिक) विकास। यह शिक्षा नीति विश्व शान्ति के लिए "वसुधैव कुटुम्बकम्"की भावना को विकसित करने वाली होगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत कहा गया है कि देश के विभिन्न उच्चतर शिक्षा संस्थान व भाषा, साहित्य, संगीत, दर्शन, कला, नृत्य, नाट्यकला, गणित, सांख्यिकी सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक विज्ञान समाजशास्त्र अर्थशास्त्र खेल, अनुवाद एवं व्याख्या और अन्य विषयों के विभागों को बहुविषयक, भारतीय शिक्षा और वातावरण को प्रोत्साहित करने के लिए स्थापित एवं मजबूत किया जायेगा। समग्र शिक्षा के अन्तर्गत उच्चतर संस्थान अपने ही संस्थानों में या अन्य उच्चतर शिक्षा शोध संस्थानों में इंटर्नशिप के अवसर उपलब्ध कराऐंगें। जैसे स्थानीय उद्योग, व्यवसाय, कलाकार, शिल्पकार आदि के साथ इंटर्नशिप अध्यापकों और शोधार्थियों के साथ शोध इंटर्नशिप ताकि छात्र सक्रिय रूप से अपने सीखने के व्यावहारिक पक्ष के साथ जुड़े और साथ ही साथ स्वयं के रोजगार की संभावना को बढ़ा सकें।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुविषयक शिक्षा एवं शोध के लिए कहा गया है कि भारत में विज्ञान और गणित से लेकर कला, साहित्य, स्वर, भाषा चिकित्सा और कृषि तक के विषयों में अनुसंधान एवं ज्ञान की लम्बी परम्परा रही है और भविष्य में इन्हें हमें अपनाना चाहिए। समग्र एवं बहुविषयक शिक्षा एवं शोध के माध्यम से भारत जल्द से जल्द एक मजबूत और प्रबुद्ध ज्ञान समाज के गुरु के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को और सुदृढ़ करेगा। यह तभी सम्भव है जब हम विद्यार्थियों को बहुविषयक शिक्षा एवं शोध के लिए प्रेरित करेगें।